ज्यादा ही आश्वस्त न हो जाए

इसके साथ जुड़ा हुआ खतरा यह है कि हम इससे कुछ ज्यादा ही आश्वस्त न हो जाएं। 67 फीसदी आबादी में एंटी बॉडीज होने का ही एक मतलब यह भी है कि 33 फीसदी आबादी अब भी पूरी तरह अरक्षित है। यह संख्या इतनी बड़ी है कि किसी तरह का रिस्क नहीं लिया जा सकता।

रमन कपूर।।

पहली नजर में यह खबर निश्चित रूप से राहत देने वाली है कि देश में छह साल से ऊपर की दो तिहाई से ज्यादा आबादी में कोरोना वायरस की एंटी बॉडीज डिवेलप हो गई है। चौथे सीरो सर्वे की रिपोर्ट से सामने आई यह बात तसल्ली इसलिए भी देती है कि पहली बार इस सर्वे में 18 साल से कम उम्र के लोगों को भी शामिल किया गया। छह से 17 साल के बच्चों में भी 50 फीसदी से ज्यादा मामलों में एंटी बॉडीज पाई गई हैं। संभावित तीसरी लहर में बच्चों के ज्यादा प्रभावित होने की आशंका के मद्देजर यह तथ्य खास अहमियत रखता है। इससे पहले दिसंबर–जनवरी में करवाए गए तीसरे सीरो सर्वे की रिपोर्ट में महज 21 फीसदी आबादी में एंटी बॉडीज पाई गई थी। जाहिर है, दूसरी लहर चाहे जितनी भी विनाशकारी साबित हुई, इस दौरान हुए एंटी बॉडीज के फैलाव ने भविष्य के लिए हमें थोड़ा आश्वस्त जरूर किया है। इसके साथ जुड़ा हुआ खतरा यह है कि हम इससे कुछ ज्यादा ही आश्वस्त न हो जाएं। 67 फीसदी आबादी में एंटी बॉडीज होने का ही एक मतलब यह भी है कि 33 फीसदी आबादी अब भी पूरी तरह अरक्षित है। यह संख्या इतनी बड़ी है कि किसी तरह का रिस्क नहीं लिया जा सकता। लेकिन आम लोगों में कोरोना प्रोटोकॉल को लेकर जिस तरह की लापरवाही दिख रही है, उसमें तीसरी लहर की भयावहता का खतरा बढ़ जाता है। जाहिर है, इकलौता रास्ता यही है कि टीकाकरण अभियान में अधिकतम संभव तेजी लाकर जल्दी से जल्दी आबादी के ज्यादा से ज्यादा हिस्से को सुरक्षित कर लिया जाए। दुर्भाग्यवश इस मोर्चे पर भी कई तरह की ढिलाई दिखती है। आज भी कई राज्यों के ग्रामीण इलाकों में टीके को लेकर आम लोगों में बेरुखी दिखाई देती है। बिहार जैसे राज्यों से ऐसी खबरें मिल ही रही हैं कि स्वास्थ्यकर्मियों की टीम के गांव में पहुंचने और मंदिर–मस्जिद से लगातार अपील किए जाने के बाद भी लोग टीकाकेंद्रों पर नहीं जा रहे। टीकाकरण अभियान एक दिन का रेकॉर्ड बनाने वाला जोश दिखाने के बाद शिथिल पड़ने लगा। 21 जून को 85 लाख से ज्यादा टीके लगाए गए, लेकिन उसके बाद धीरे–धीरे हालत यह हो गई कि इस सोमवार को पिछले पूरे सप्ताह का औसत 38.62 लाख पाया गया। खास बात यह कि इसका पूरा दोष लोगों की बेरुखी पर नहीं डाला जा सकता। टीके की सप्लाई में कमी भी बहुत बड़ी वजह है। मध्य प्रदेश जैसे राज्यों के कई इलाकों में लोग टीका केंद्रों पर पहुंच कर घंटों इंतजार करते हैं और जब सीमित मात्रा में टीके पहुंचते हैं तो टोकन लेने के लिए ऐसी होड़ मचती है कि कोरोना प्रोटोकॉल की धज्जियां उड़ती दिखाई देने लगती हैं। ऐसी अव्यवस्था और सप्लाई की अनियमितता दूर करके ही हम तीसरी लहर के खतरे को कम करने की सोच सकते हैं।

क्रोध

अशोक वोहरा।

हनुमान ने सोचा नारद देवताओं के ऋषि हैं, ठीक ही कह रहे होंगे। उनकी बात अवश्य माननी चाहिए। उन्होंने कहा – ठीक है देवर्षि, मैं ऐसा ही करूंगा। दरबार में भगवान श्रीराम सिंहासन पर बैठे थे। मंत्री तथा ऋषि आदि भी अपने–अपने आसन पर विराजमान थे। थोड़ी ही देर में हनुमान जी आए। भगवान श्रीराम के चरणों में प्रणाम किया फिर ऋषियों का चरण स्पर्श कर प्रणाम किया फिर उन्हीं के बीच बैठे विश्वामित्र को न तो उन्होंने प्रणाम किया और न किसी प्रकार का आदरभाव दिखाया। हनुमान के इस व्यवहार से विश्वामित्र ने अपने को बड़ा अपमानित समझा। वे राजा तथा ऋषियों के बीच इस प्रकार अपनी उपेक्षा था अपमान को सहन न कर सके। तत्काल ही क्रोध में उठ खड़े हुए और श्रीराम से बोले– श्रीराम! तुमने अपने इस मुंहलगे सेवक की धृष्टता देखी ?

संपादकीय

बड़ी चुनौती

परंपरागत रूप से दलित कांग्रेस के साथ रहे हैं। उसके जनाधार में बीएसपी की ओर से सेंध लगी थी, लेकिन अब दलित वापस इस ओर आ गए हैं। कांग्रेस ने 2017 के चुनावों में अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित 34 में से 22 सीटें जीती थीं। इसे ध्यान में रख कर ही अकाली दल ने आने वाले चुनावों के लिए मायावती से गठबंधन किया है। उसने बीएसपी को बीस सीटें दी हैं। अकाली दल ने यह वादा भी किया है कि उसकी सरकार आई तो वह दलित को उपमुख्यमंत्री पद देगा। यह भी समझना गलत होगा कि समुदाय के रूप में दलित आपस में एक हैं। उनका एक तिहाई हिस्सा सिख है और मजहबी सिख कहलाता है। वे खेती से जुड़े हैं और ज्यादातर भूमिहीन किसान और खेतिहर मजदूर हैं। चर्मकार और वाल्मिकी समाज की तादाद भी अच्छी है। वे क्षेत्रीय आधार पर भी आपस में बंटे हुए हैं। उनकी राजनीतिक भागीदारी क्षेत्रीय आधार पर भी तय होती है। यह कांग्रेस के लिए एक बड़ी चुनौती थी कि दलित समुदाय को वह किस तरह संतुष्ट करे। सत्ता–विरोधी भावना से डरी हुई कांग्रेस के लिए दलित समुदाय का वोट काफी मायने रखता है। कांग्रेस के इस दांव ने अकाली दल के उपमुख्यमंत्री पद के वादे को तो निरर्थक बना ही दिया है, लेकिन क्या दलित समुदाय का दिल जीतने के लिए यह काफी होगा?

भारत–पाक विभाजन में सबसे ज्यादा नुकसान पंजाब ने ही उठाया। यह इसके बावजूद हुआ कि वहां मुस्लिम लीग की राजनीति का कोई असर नहीं था और बड़े किसानों ने एक सेकुलर गठबंधन बना रखा था।

विभाजन का जख्म

अनिल सिन्हा।।

अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों की आहट से संबंधित राज्यों में राजनीतिक उठापटक तेज हो गई है। बीजेपी ने उत्तराखंड में चार महीने में तीन मुख्यमंत्री दे दिए। कर्नाटक में (हालांकि वहां चुनाव 2023 में हैं) येदियुरप्पा को सीएम की कुर्सी से हटाया और गुजरात में तो मुख्यमंत्री के साथ उनका पूरा मंत्रिमंडल ही बदल डाला। मुख्यमंत्रियों की छुट्टी करने की इस लहर की चपेट में पंजाब भी आ गया है। वहां नए मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने शपथ ले ली है। वह राज्य के पहले दलित मुख्यमंत्री हैं। वहां दलितों की आबादी करीब एक तिहाई है, लेकिन उन्हें राज्य का नेतृत्व संभालने का मौका अभी तक नहीं मिल पाया था। अगर सामाजिक प्रगति के लिहाज से देखें तो यह एक क्रांतिकारी घटना है। पंजाब की राजनीति में संपन्न किसानों का, बल्कि कहें जाट समुदाय का वर्चस्व रहा है। सिखों और हिंदुओं, दोनों में वे ही नेतृत्व में रहे हैं।

भारत–पाक विभाजन में सबसे ज्यादा नुकसान पंजाब ने ही उठाया। यह इसके बावजूद हुआ कि वहां मुस्लिम लीग की राजनीति का कोई असर नहीं था और बड़े किसानों ने एक सेकुलर गठबंधन बना रखा था। विभाजन ने राज्य की राजनीति और जीवन, दोनों को बदल दिया।

बंटवारे के बाद दोनों ओर सामूहिक कत्लेआम हुए और इसका नतीजा है कि पाकिस्तान वाले हिस्से में हिंदुओं–सिखों की आबादी ना के बराबर रह गई। यही हाल भारत वाले हिस्से का हुआ। यहां भी डेढ़ प्रतिशत मुसलमान रह गए। पंजाब में हिंदुओं, सिखों और मुसलमानों की आपस में गुंथी हुई जिंदगी थी। विभाजन से सब कुछ टूट गया। विभाजन के बाद वहां की राजनीति नए सिरे से शुरू हुई। इस नई राजनीति में अकाली दल और कांग्रेस के अलावा वाम दल प्रमुख भूमिका में थे।

खालिस्तानी आतंकवाद भी विभाजन से कम बड़ी परेशानी लेकर नहीं आया। इसने भी वहां के जन–जीवन को अस्त–व्यस्त किया। ऑपरेशन ब्लू स्टार जैसी घटनाएं हुईं। इसके बाद प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और मुख्यमंत्री बेअंत सिंह की हत्या कर दी गई। राज्य के लोग इस दौर से भी निकल गए। ध्यान देने लायक बात है कि इस कठिन दौर में भी खेती और औद्योगिक उत्पादन नीचे नहीं आया।

सामाजिक–आर्थिक हिसाब से देखें तो देश के बाकी हिस्सों की तरह यहां भी दलित हाशिए पर ही हैं। करीब 32 प्रतिशत की आबादी होने के बावजूद जमीन और संपत्ति में उनका न्यूनतम हिस्सा है। सिख धर्म के कारण उन्हें उस तरह के सामाजिक उत्पीड़न का शिकार नहीं होना पड़ता है, जो देश के बाकी हिस्सों में दिखाई देता है, लेकिन उनका आर्थिक शोषण कम नहीं है। शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में भी उनकी भागीदारी काफी कम है।

कांशीराम ने अस्सी के दशक में दलितों को एक करने की कोशिश की थी और उनके प्रयासों का असर 1992 के चुनावों में दिखाई पड़ा। बीएसपी ने तब विधानसभा की नौ सीटें जीत ली थीं और उसे कुल 16 प्रतिशत वोट मिले। पार्टी ने 1996 का लोकसभा चुनाव शिरोमणि अकाली दल के साथ मिलकर लड़ा और तीन सीटों पर कब्जा किया। कांशीराम भी चुने गए। लेकिन कांशीराम के बाद बीएसपी का फोकस उत्तर प्रदेश पर ही रहा और पंजाब में पार्टी का आधार कमजोर होता गया। 2017 के चुनावों में उसे सिर्फ डेढ़ प्रतिशत वोटों से संतोष करना पड़ा।

अष्टयोग- 5109

4	2		3	5	1	
2	32	4	39	7	34	4
	1		4		5	2
	30	3	38	6	31	
1	2		6		7	
3	27	2	25	1	31	
	6	1	4		3	5

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों ओर के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5108 का हल

7	6	1	4	2	3	5
2	28	4	33	7	35	4
1	2	5	6	4	7	3
5	28	3	38	6	34	1
4	2	6	3	5	1	7
3	31	2	31	1	30	6
6	1	7	4	3	5	2

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

भारत जैसी धर्म निरपेक्षता दुनिया में कहीं नहीं

मोहन। इन देशों के गैर–इस्लामी लोग कुछ अतियों की शिकायत जरुर करते थे लेकिन कुल मिलाकर वे भारत के अल्पसंख्यकों की तरह खुश दिखाई पड़ते थे। यहां तक कि जिन्ना और भुट्टो के मंत्रिमंडल में कुछ हिंदू भी थे। अफगान बादशाह अमानुल्लाह की सरकार में कई हिंदू काफी बड़े पदों पर रहे हैं। लेकिन यह सच है कि भारत जैसी धर्म निरपेक्षता दुनिया में कहीं नहीं रही हैं। स्पेन में महारानी ईसाबेल ने मस्जिदों का और तुर्कों ने गिरजों का क्या हाल किया था ? यूरोप के मध्यकालीन केथोलिक शासकों के जुल्मों की कहानियां रोंगटे खड़े कर देती हैं। हिटलर के राज में यहूदियों का जीवन कितना नारकीय हो गया था ? आज भी चीन के उइगर मुसलमानों, रूस के चेचन्या मुसलमानों और फ्रांस और जापान के विधर्मियों के साथ जैसी निर्मम सख्ती हो रही है, क्या वैसी भारत में हो रही है या कभी हुई है क्या ? हम लोगों को, चाहे हम हिंदू हो, मुसलमान हों, ईसाई हों, हमें गर्व होना चाहिए कि हम भारतीय हैं।